International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

राजपूत आन-बान और सल्तनत की सियासत वीरमदेव-फिरोजा के प्रेम प्रसंग का ऐतिहासिक विश्लेषण

प्रो. ऋतु पटेल

गैस्ट फेक्ल्टी (इतिहास)

राजकीय बांगड़ महाविद्यालय, पाली

1. सारांश :-

जालौर की सामरिक व व्यापारिक अवस्थिति अत्यन्त महत्वपूर्ण थी। इसके चलते अलाउदीन खिलजी जालोर का विलय सल्तनत में करना चाहता था | जालौर दुर्ग सोनगढ़ पहाड़ी पर स्थित था इस कारण यहाँ के चौहानों को सोनगरा चौहान कहा जाता है | इतिहास के मुख्य विषय-वस्तु में अधिकतर युद्धो व साम्राज्यवादी विस्तार के ईद- गिर्द घुमती है वही जालोर पर अंतिम अभियान जालोर राजकुमार वीरमदेव सोनगरा तथा अलाउदीन खिलजी की पुत्री शहजादी फिरोजा के प्रेम प्रसंग पर आधारित था|

पद्मनाभ श्री रचित कान्हडदे प्रबंध और मुहणोत नैणसी री ख्यात इस बात की पुष्टि करते है, कि एक तरफ़ाप्रेम, राजनीतिक प्रस्ताव, और कुल की मर्यादा आपस में टकराए |

2. प्रस्तावना :-

13वीं-14वीं शताब्दी के मध्य भारतीय इतिहास में उथल पथल का दौर था उस समय अलाउदीन खिलजी ने अपनी साम्राज्यवादी नीति के तहत उत्तरी भारत के समस्त राज्यों पर अभियान किए। अलाउदीन ने गुजरात, मालवा, रणथंभौर, जालौर तथा अन्य दक्षिण भारत के क्षेत्रों पर भी अभियान किये।

अलाउद्दीन खिलजी के साथ संघर्ष का मुख्य कारण गुजरात से लुटपाट के बाद वापिस लौटी सेना को जालौर शासक कान्हड़देव तथा जैता देवड़ा द्वारा इस सेना को लुटा तथा सोमनाथ से लूटकर लायी गई मूर्ति को भी ले लिया तथा सराणा में शिव मंदिर बनाया| (1299)

3. जालौर पर किए गए अभियान :-

जालोर पर अलाउदीन खिलजी ने अभियान किए (1305–1311 ई.)।

(1) प्रथम अभियान – 1305 ई. में आइन-एल-मुल्क के नेतृत्व में अभियान भेजा गया। जालौर दुर्ग की चाबी कहे जाने वाले सिवाणा दुर्ग के चारो तरफ घेरा डाला | बाद में कान्हड़देव ने वार्ता प्रस्ताव स्वीकारा तथा वार्ता हेतु दिल्ली गए | दिल्ली दरबार में कान्हड़देव के साथ उचित व्यवहार नहीं हुआ। इस कारण कान्हड़देव बिना अनुमति के वापस जालौर आ गए।

यहाँ पर नैणसी लिखते है कि खिलजी की पुत्री फिरोजा के प्रेम विवाह प्रस्ताव को अस्वीकृत कर वीरमदेव दिल्ली से जालोर लौट आया, इस कारण जालौर अभियान हुआ था।

(2) द्वितीय अभियान :-

इस अभियान में मुल्क के साथ - साथ शम्सखान, कमालुद्दीनगुर्ग, शाहीन खान , मलिक नायब इत्यादि के नेतृत्व में विशाल सेना सिवाणा भेजी | इस समय सिवाणा पर सातलदेव (कान्हड़देव का भतीजा) का शासन था।

लम्बे समय के घेरे के बाद सातलदेव के सेनापति ने विश्वासघात किया, और किले में स्थित मामाकुंड तालाब में रक्त मिला दिया | इस प्रकार दोनों सेनाओं में युद्ध हुआ तथा कान्हड़देव ने सहायता नहीं कि और सातलदेव युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुए तथा रानी मैणा दे ने जौहर किया। सिवाणा पर सल्तनत का अधिकार हुआ | सिवाणा का नाम **खैराबाद** रखा गया।

(3) तृतीय अभियान :-

सिवाणा विजय के बाद कमालुद्दीन गुर्ग के नेतृत्व में सेना जालौर की ओर आगे बढ़ती है। इस सेना की सहायता के लिए दिल्ली से सेना की टुकड़ी भेजी |

नैणसी के अनुसार, **"वीरमदेव को फिरोजा ने जालौर से लाने के लिए गुलबिहिश्त (दासी) के नेतृत्व में सेना भेजी।"**

लम्बे समय तक घेरे के बाद सफलता नहीं मिली। लेकिन इस समय बीका दहिया ने विश्वासघात किया और उसने सेना को वह स्थान बताया जहाँ किले की दीवार टूटी हुई थी। (राई की कहावत इसी से सम्बंधित है)

कान्हड़देव, वीरमदेव एवं जैता देवडा लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए। किले में रानी जेतल दे के नेतृत्व में जौहर हुआ। जालौर पर अलाउदीन का अधिकार हो गया। जालौर का नाम **जलालाबाद** कर दिया गया। किले के भीतर मंदिर ध्वस्त करके **अलाई मस्जिद** एवं **तोप मस्जिद** का निर्माण किया।

4. राजपूत की आन-बान बनाम सल्तनत की सियासत:-

फिरोजा का हठ :- फिरोजा ने वीरमदेव को दिल्ली दरबार में देखा तथा उसे देखते ही वह वीरमदेव से एक तरफ़ा प्रेम कर बैठी | उसने दरबार में घोषणा की–

"वर वरूँ तो वीरमदेव, ना तो रहूँगी अकन कुँवारी।"

वीरमदेव का इंकार:-

सुल्तान द्वारा शादी का प्रस्ताव जब जालौर भेजा गया तो वीरमदेव ने अपनी मातृभूमि के सम्मान तथा कुल मर्यादा के लिए ठुकरा दिया।

"मामो लाजै भाटिया, कुल लाजै चौहान, |
जै मै परकुँ तुर्कणी, तो पश्चिम उगै भाण ।"

अर्थात यदि मैं एक तुर्कणी से विवाह करता हूँ, तो मेरा ननिहाल **(भाटी वंश)** तथा **पितृवंश (चौहान)** को लजा आएँगी, ऐसा तभी होगा जब सूर्य पश्चिम से उदय हो |

5. परिणाम :-

इस प्रकार जब प्रस्ताव को ठुकराया गया, तब अलाउदीन खिलजी ने अपने साम्राज्यवादी अहंकार पर चोट माना तथा इसके परिणामस्वरूप जालौर दुर्ग का घेरा डाला।

भंयंकर युद्ध के बाद जब दुर्ग के राजपूत वीरो ने केसरिया किया तथा रानी व राजकुमारियों ने जौहर का अनुष्ठान किया। वीरमदेव सहित सभी राजपूत लड़ते हुए को वीरगति प्राप्त हुए। विरमदेव को पता था कि इस प्रस्ताव को ठुकराना, मतलब जालोर की मौत लेकिन फिर भी उन्होने अपने राजधर्म तथा कुल की मान मर्यादा सर्वोपरी रखा |

निष्कर्ष:- वीरमदेव व फिरोजा का प्रसंग इतिहास के पन्नो में सिर्फ एक युद्ध की वजह ही नहीं बल्कि दो भिन्न धार्मिक समुदायों, संस्कृतियो, राजनितिक शक्तियों के बीच उपजे एक अनूठे मानवीय संवेग की कहानी है| एक तरफ जहां फिरोजा का प्रेम धार्मिक बन्धनों से परे था वही दूसरी और वीरमदेव का आत्मसमान तथा मातृभूमि की गौरव की रक्षा करना था |

सरकारी इतिहासकारी विश्वनाथ रेऊ के अनुसार जालोर पर अंतिम अभियान 1311 में हुआ |

वही फ़रिश्ता के अनुसार 1308 ई. व तथा तीर्थकल्प के अनुसार 1310 में यह अभियान हुआ |

6. सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :-

1. डॉ. दशरथ शर्मा, अर्ली चौहान डायनेस्टी (नई दिल्ली, एस. चन्द एंड कंपनी, 1959) पृष्ट संख्या 160 – 185
2. डॉ. गोपीनाथ शर्मा :- राजस्थान का इतिहास (आगरा, शिव लाल अग्रवाल एंड कंपनी, 1971) पृष्ट संख्या 142 – 148
3. डॉ. नारायण माली :- राजस्थान का इतिहास, संस्कृति, परंपरा एवं विरासत (राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी,) पृष्ट संख्या 150 – 170
4. डॉ. मोहन लाल गुप्ता- जालोर का राजनितिक एवं सांस्कृतिक इतिहास (सुभद्रा प्रकाशन, 1995) पृष्ट संख्या 114 – 134
5. डॉ. अशोक कुमार श्रीवास्तव :- द चाहमानस ऑफ़ जालौंर अध्याय VI (गोरखपुर : साहित्य संसार प्रकाशन, 1979) पृष्ट संख्या. 41-55
iBid D. Shamra अर्ली चौहान डायनेस्टी पृष्ट संख्या. 164-165 (169-170)